पर्यावरण का सबसे बड़ा दुश्मन-मानव

हर्षित गर्ग, कक्षा-11

- हाल के दिनो में बड़ी मात्रा में प्रवासी पक्षियों की मृत्यु हुई है। बढ़ता प्रदूषण, उन्हें दिया जाने वाला भोजन अर्थात मटर के आटे की गोलियां एवं नूडल्स में खराब तेल का प्रयोग और कीटनाशक उनकी मृत्यु के मुख्य कारण हैं ।
- वैज्ञनिकों के अनुसार वर्ष 2010 तक पक्षियों की 10 प्रतिशत आबादी विलुप्त हो जायेगी । इसका मानव के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि पक्षी पर्यावरण के कीड़े-मकोड़ों की आबादी पर नियन्त्रण रखते हैं ।
- मानव द्वारा प्रकृति से छेड़छाड के दुष्परिणाम से दुनिया की करीब 800 वन्य प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार पर हैं और वन्य क्षेत्रों में मानवीय हस्तक्षेप बढ़ता रहा तो उन्हें लुप्त होने से बचाना असम्भव हो जायेगा ।
- जंगलों के कटने , फसलों में रासायनिक खादों के ज्यादा प्रयोग और प्रदूषण के कारण वन्य जीव सम्पदा में कमी होती जा रही है । इससे परिस्थितिकी सन्तुलन के लिए खतरा उत्पन्न हो रहा है ।
- फसलों पर कीटनाशक के छिड़काव का अधिकाश कीड़ों पर असर नहीं पड़ता, क्योंकि उन्होंने अब अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा ली है । बल्कि दवाओं से फसलों के मित्र केंचुए व पक्षी मर जाते हैं इसका असर हमारे भोजन पर पड़ता है ।
- समुद्री क्षेत्रों में प्रदूषण के बढ़ने से मादा जीवों की संख्या कम हो रही है इससे कई जीवों का वंश विलुप्त हो सकता है । रासायनिक खादों एवं दूसरे प्रदूषकों से विश्व का करीब एक लाख वर्ग मील क्षेत्र मृत क्षेत्र में परिवर्तित हो चुका है ।

- दलदल हमारे पारिस्थिति तंत्र के गुर्दे की तरह है । उन्हें प्रदूषित होने व सूखने से बचाये जाना जरूरी है । दलदली क्षेत्र में प्रदूषण और औद्योगिक कचरे के कारण अकेले फरवरी माह में करीब 850 प्रवासी पक्षी मेहमान मारे गये ।

- वृक्षों की कमी और बढ़ते प्रदूषण के कारण पृथ्वी के तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है इससे समुद्र का जल गर्म होता जा रहा है जिससे समुद्र में उपस्थित मछलियाँ व अन्य जीवों का अस्तित्व संकट में आ गया है।

- गंगोत्री के पास जल के क्षारीय रसायन सल्फेट की मात्रा क्रमशः 9.3 व 3.2 मिली मीटर प्रति लीटर है । हुगली में इनकी मात्रा 145-268 व 17 से 34 मिली मीटर प्रति लीटर है । इससे जल खारा होता है व नदी का प्रवाह भी प्रवाहित होता है ।

- हमारे धार्मिक देश में हजारों मूर्तियां नदियों एवं समुद्र में विसर्जित की जाती है । इनसे कई हजार टन वार्निश, रंग-रोगन और प्लास्टिक आदि का सजावटी सामान नदियों में पहुंचता है जो केवल जलीय जीवों ही नहीं बल्कि मनुष्यों के लिए भी घातक है ।

- गंगा के उद्‌गम स्थल गंगोत्री के पानी में आक्सीजन की मात्रा 9.4 से 11.1 मिली मीटर प्रति लीटर है, लेकिन यह हुगली तक पहुंचने पर 1.2 से 1.4 प्रतिशत ही रह जाती है । इसमें पानी की कीटाणुनाशक क्षमता लगातार कम हो रही है । जबकि पीने के पानी के लिए कम से कम आठ मिलीमीटर प्रति लीटर आक्सीजन होनी चाहिए ।

- देश की 80 प्रतिशत जनसंख्या 14 प्रमुख नदी - घाटियों पर अपनी जल जरूरतों के लिए निर्भर रहती है, लेकिन आज सारी जीवन दायिनी नदियां और झीलें प्रदूषित होकर गन्दे नालों में बदल गयी हैं ।

- यमुना नदी में क्लोराइड की मात्रा 294 पाटर्स पर मिलियन प्रति लीटर नापी गई है जो अपने अधिकतम स्तर से 250 से 44 पी.पी.एम. अधिक है । सीवरों व कारखानों से निकले कचरों को यमुना में बहा देने से इसका जल प्रदूषित हुआ है ।
- वर्ष 1861 से पृथ्वी की सतह के औसत तापमान में लगातार वृद्धि हुई हैं । गर्म जलवायु मलेरिया वाहक मच्छरों के अलावा अन्य बीमारियाँ फैलाने वाले कीट-पंतगों को पनपने का सुनहरा मौका देती है ।
- कार्बन डाईआक्साइड, मीथेन जैसी ग्रीन हाऊस गैसों के ज्यादा उत्सर्जन के कारण ओजोन पर्त में छेद बढ़ता जा रहा है । यह पर्त सूर्य से पृथ्वी पर आने वाली उन खतरनाक पराबैंगनी किरणों को रोकता है, जिससे गम्भीर बीमारियाँ होती हैं ।
- ओजोन पर्त में एक प्रतिशत की कमी से कैंसर रोगियों की संख्या में छः प्रतिशत की वृद्धि हुई है । रेफ्रिजरेशन , एयर कन्डीशनिंग व प्लास्टिक आदि ओजोन पर्त में छेद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।
- प्रतिवर्ष 3,62,000 मीट्रिक टन क्लोरो-फ्लोरो-कार्बन वायुमण्डल में छोड़ी जा रही है, जिससे पृथ्वी के तापमान में तेजी से वृद्धि हो रही है । तापमान में वृद्धि के कारण तुफानों व भूकम्पों की आशंका बढ़ रही है ।
- औद्योगिकीकरण व जीवाश्य ईंधनों के कारण पृथ्वी का तापमान 2100 तक औसत 1.4 से 5 डिग्री सेन्टीग्रेट तक तथा समुद्र तल से 9 से 88 सेमी तक की वृद्धि होगी ।
- वायुमण्डल में कार्बन डाइआक्साइड, मिथेन व नाइट्रस आक्साइड का स्तर 35, 155, व 18 प्रतिशत तक बढ़ गया है ।

- ग्लोबल वार्मिंग के चलते पर्वतों पर ग्लेशियर व हिमखण्ड पिघल जायेंगे जिससे समुद्र के पानी का आयतन बढ़ेगा व तटीय क्षेत्र डूब जायेगे व बाढ़ व सूखे की पुनारावृत्ति होगी ।
- वातावरण में बढ़ती गर्मी का कारण, वायुमण्डल में कार्बन डाईआक्साइड का स्तर 381 अंश प्रति 10 लाख पर पहुँच गया है जो औद्योगिक क्रान्ति से पहले 100 अंश जाता है ।
- विश्व भर में अनाज के उत्पादन पर भूमि कटाव, वायु प्रदूषण व अधिक तापमान का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, विश्व बैंक का अनुमान है कि अवैध वन विभाग के कारण गरीब देशों को 10-15 अरब डालर की क्षति प्रतिवर्ष हो रही है ।